Baba’s Praise

21/4/2015

- हम आत्मायें जो पावन थी वही पतित बनी हैं फिर हमको पावन बनना है। उसके लिए स्वीट फादर को याद करना है।उनसे स्वीट और कोई चीज़ होती नहीं।

- यह विषय सागर वेश्यालय है। सत तो एक ही परमपिता परमात्मा है। गॉड इज वन कहा जाता है। वह आकर सत्य बात समझाते हैं।

- वही ज्ञान का सागर, पतित- पावन है। नई सृष्टि का रचयिता है। पुरानी सृष्टि का विनाश कराते हैं। यह त्रिमूर्ति तो प्रसिद्ध है। ऊंच ते ऊंच है शिव।

- मैं हूँ परम आत्मा, परमधाम में रहने वाला हूँ। तुम भी वहाँ के रहने वाले हो। मैं सुप्रीम पतित-पावन हूँ। तुम अभी ईश्वरीय बुद्धि वाले बने हो।